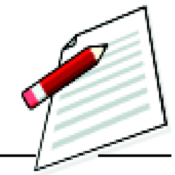

1

ग्रन्थालय एवं सूचना केन्द्रः अवधारणा और समाज में भूमिका

1.1 परिचय

आधुनिक सूचना समाज में ग्रन्थालय और सूचना केन्द्रों को एक नई भूमिका निभानी है। यह वेब आधारित सूचना स्रोतों और इलेक्ट्रानिक सेवाओं के बढ़ते हुए उपयोग के कारणों से है ग्रंथालय को लचीली संचार प्रणाली और कुशल कार्य संगठन के कारण और अधिक लोकतांत्रिक ढंग से प्रबंधित किया जा रहा है। उनकी सेवाएँ भी उपयोगकर्ता केंद्रित हैं।

इस पाठ में हम ग्रंथालय और सूचना संगठनों की भूमिका पर चर्चा करेगें। हम शिक्षा सांस्कृतिक और मनोरंजन में ग्रंथालय के महत्व का भी अधयययन करेंगे।

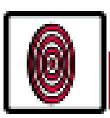

1.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम हो सकेंगे।

- ग्रंथालय और सूचना केंद्र को परिभाषित करने;
- ग्रंथालय और सूचना केद्रों के उदेश्यों और कार्यों की विवेचना करने;
- आधुनिक समाज में पुस्तकालयों एवं सूचना केन्द्रों की भूमिका को समझने;
- ग्रंथालय सूचना केन्द्रों की गतिविधियों की सूची बनाने;
- शिक्षा संस्कृति और मनोरंजन में ग्रंथालयों के महत्व की व्याख्या करने ; और
- ज्ञान निधि के रूप में ग्रंथालय की भूमिका की व्याख्या करने में।

1.3 ग्रंथालय की परिभाषा

लाइब्रेरी शब्द की व्युत्पति लैटिन शब्द लिब्रेरिया से हुई जिसका अर्थ पुस्तक ग्रंथ रखने

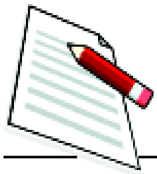

का स्थान। ऑक्सफोर्ड (कंपेनियन टू इंग्लिश लैंग्वेज के अनुसार-ग्रंथालय पुस्तकों पत्रिकाओं या अन्य साम्रगी मुख्य रूप से लिखित और मुद्रित का संग्रह है। हैरॉड्स लाइब्रेरियंन्स ग्लॉसरी एण्ड रैफ्रेंस बुक के अनुसार ग्रंथालय:

1. जहाँ ग्रंथों और अन्य साहित्यिक साम्रगी का संग्रह पठन अध्ययन और संदर्भ के लिए किया जाता है।
2. ऐसा स्थांन, भवन, कमरा या विशेष कक्ष जहाँ उपयोग के लिए ग्रंथों के संग्रह को रखा जाए।
3. किसी प्रकाशक द्वारा व्यापक आख्या के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों का सैट जैसे ''लोएब क्लासिकल लाइबेरी'' ऐसे सैट के प्रत्येक ग्रंथ में कुछ सामान्य विशेषताएँ होती हैं जैसे विषय जिल्द या मुद्रण।
4. फिल्मों-छायाचित्रों तथा अन्य पुस्तकेतर सामग्री प्लास्टिक या धातु के टेप या डिस्क या प्रोगाम का संग्रह।

उपर्युक्त परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए ग्रंथालय की परिभाषा दी जा सकती है।

(अ) वह स्थान जहाँ पर साहित्यिक और कलात्मक सामग्री जैसे पुस्तकों, पत्रिकाओं समाचार पत्रों, लघु पुस्तकों मुद्रण अभिलेखों, टेपों आदि को अध्ययन, संदर्भ, या उधार देने के लिए रखा जाता है।

(ब) इस प्रकार का संग्रह विशेषत: जब विधिपूर्वक व्यवस्थित हो।

(स) एक निजी घर का एक कमरा जहाँ ऐसा संग्रह हो।

(द) संस्था या न्यास जहाँ पर ऐसा संग्रह उपलब्ध हों।

ग्रंथालय इस प्रकार एक सामाजिक संगठन और समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई है। यह एक संगठित ढ़ंग से समाज के ज्ञान अनुभवों को व्यक्तियों में प्रसारित करते है। इनका प्रसारण पुस्तकें ओर अन्य साम्रगी जैसे मानचित्र चार्ट फोनो रिकार्ड, माइक्रोफिल्म आदि के द्वारा किया जाता है

डां एस. आर. रंगनाथन भारत के ग्रंथालय विज्ञान के जनक ने ग्रंथालय की व्याख्या इस प्रकार की है – ग्रंथालय ऐसी सार्वजनिक संस्था या प्रतिष्ठान है जिसका दायित्व और कर्त्तव्य ग्रंथालय संग्रह की देख भाल करना तथा इन्हे उन लोगों को उपलब्ध कराना है जिनकी इन्हें आवश्यकता है।

इस प्रकार उपयुक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रंथालय में मानव विचारों के अभिलेखों का सुव्यवस्थित संग्रह होता है इन अभिलिखों के भौतिक स्वरूपों मे पाण्डुलिपि पुस्तकें पत्रिकाएँ, ग्राफ, माइकोफिल्म, चार्ट आदि। इन अभिलेखों की व्यवस्था एवं सुरक्षा की जाती है जिससे भविष्य में उपयोगकर्ता द्वारा प्रभाव ढंग से उपयोग हो सकें।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. ग्रंथालय के अस्तित्व के लिए तीन बुनियादी आवश्यकताएँ क्या हैं।
2. मानव विचारों के अभिलेखों के कम से कम पाँच स्वरूपों की सूची बनाइए जो ग्रंथालय में उपलब्ध कराये जाते हैं।

1.4 ग्रंथालय के उद्देश्य एवं कार्य

ग्रंथालय के उद्देश्य एवं कार्य निम्नलिखित हैं:

1.4.1 उद्देश्य

ग्रंथालय स्थापित करने का उद्देश्य है मानव के विचारों, भावनाओं और अभिव्यक्तियों से संबधित अभिलेखों को सब के लिए उपलब्ध कराना।

1.4.2 कार्य

ग्रंथालय के कार्य निम्नलिखित हैं :

- ग्रंथालय में ग्रंथों एवं ग्रंथेतर अभिलेखों को उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान करना जिससे कोई भी व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के चिंतन से अवगत हो सके और स्वतन्त्र चिंतन अनुरूप कार्य कर सकें;
- ज्ञान, शिक्षा और संस्कृति के विकास और विस्तार में वृद्धि करना;
- समाज मे औपचारिक और अनौपचारिक जीवन पर्यंत स्व-शिक्षा की सुविधा प्रदान करना:
- मानवजाति के साहित्यिक और सांस्कृतिक निधि को भावी पीढ़ी के लिए संस्कृति व अनुसंधान साम्रगी के साधन के रूप में संरक्षण प्रदान करना;
- उपयोक्ताओं को आयु, जाति, रंग, धर्म, लिंग आदि के भेदभाव बिना विश्वसनीय सूचनाओं को उपलब्ध कराना;
- प्रबुद्ध नागरिकता एवं उन्नत व्यक्तिगत जीवन को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोगी संसाधनों का संकलन करना; और
- समुदाय की संस्कृति को उन्नत बनाने में सुविधा प्रदान करना।

उपर्युक्त को ध्यान में रखकर ग्रंथालय के कार्यो को प्रायः चार मुख्य क्षेत्रों में समूहबद्ध किया जा सकता है।

(क) शिक्षा

ग्रंथालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति और समूह के आत्मविकास के लिए सुविधाएँ उपलब्ध करता है। अभिलिखित ज्ञान और व्यक्ति के बीच की दूरी को कम करता है। शैक्षणिक केंद्र के रूप में ग्रंथालय सभी प्रकार की शिक्षा जैसे औपचारिक अनौपचारिक प्रौढ तथा जीवन पर्यंत विकास की शिक्षा में सहायक होते है। इसकी प्राप्ति समुदाय के लिए ग्रंथों और अन्य पाठन साम्रगी के संग्रहण द्वारा की जाती है।

(ख) सूचना प्रसार

ग्रंथालय प्रत्येक व्यक्ति और समूह के लिए उनकी रूचि और आवश्यकता के अनुसार सही अद्यतन सूचना उपलब्ध करता है। सूचना सेवाओं का क्षेत्र व्यापक हो गया है जिसमें समाज की सामाजिक आर्थिक आवश्यकताएँ भी शामिल हो गई है। ग्रंथालय विशिष्ट सूचना स्रोतों से सूचना उपलब्ध कराने की दृष्टि से एक सूचना केंद्र या निर्देशात्मक केंद्र के रूप में कार्य करता है। रोजगार के अवसर जनउपयोगी सेवाओं सामाजिक चेतना कार्यक्रम आदि सामाजिक विकास सें संबंधित विभागों द्वारा संचालित कार्य सूचना के आवश्यक क्षेत्र है। इन क्षेत्रों की सूचनाओं का संकलन तथा संग्रह पुस्तकालय सामान्य जन को प्रसारित करने हेतू करता हैं।

(ग) संस्कृति का प्रोत्साहन

ग्रंथालय मुख्य केद्रं के रूप में सांस्कृतिक जीवन और सहभागिता का प्रसार मनोरंजन व समस्त कलाओं का मूल्यांकन करने का कार्य करता है सांस्कृतिक विकास के दो पक्ष है प्रथम पाठन और चिंतन जिस के द्वारा व्यक्ति के मानसिक स्तर में वृद्धि करना और उसकी सर्जनात्मक प्रतिभा का विकास करना दूसरा व्याख्यान सेमीनार पुस्तक प्रर्दशनी सांस्कृतिक सभाओं का उपयोग कर समाज के सांस्कृतिक उत्थान के लिए योगदान देना।

(घ) मनोंरजन

ग्रंथालय अवकाश के समय का सकारात्मक उपयोग करने के लिए पठनीय सामग्री उपलब्ध कराते हुए परिवर्तन एवं विश्रांति की भूमिका अदा करता है। खाली समय का स्वस्थ्य अथवा सकारात्मक उपयोग करवाना ग्रंथालय का आवश्यक कार्य है उपन्यास पत्र-पत्रिकाएँ समाचार पत्र एवं अन्य सामग्री मनोरंजनात्मक पढन की सुविधा प्रदान करते हैं। दृश्य-श्रव्य सामग्री जैसे फिल्म, टेलिविजन, रेडियो आडियो-विडियो कैसेट जन पुस्तकालय के उपयोग को बढ़ाते हैं। विविध प्रकार के अभियात्मक कलाओं का कार्यक्रम आयोजन कर ग्रंथालय को वास्तविक रूप में सामुदायिक केंद्र बनाया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. ग्रंथालय के तीन आधारभूत कार्यों का वर्णन कीजिए।

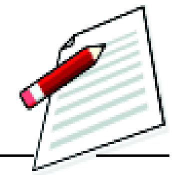

1.5 ग्रंथालय की समाज एवं शिक्षा में भूमिका

समाज के सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक विकास में ग्रंथालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अब हम आधुनिक समाज और शिक्षा में ग्रंथालयों की भूमिका का अध्ययन करेंगे।

1.5.1 ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था

ग्रंथालय सेवा प्रत्येक व्यक्ति के नियमित विकास के लिए सामाजिक आवश्यकता मानी गयी है। एक सामजिक संस्था के रूप में ग्रंथालय निम्नलिखित उदेश्यों की पूर्ति करते हैं।

(i) आजीवन स्व:शिक्षा प्राप्त करने में प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करना।

(ii) प्रत्येक व्यक्ति को सभी विषयों पर नवीनतम तथ्य एवं सूचना उपलब्ध करना।

(iii) बिना किसी भेदभाव के और संतुलित रूप मे सभी के लिए अभिलिखित विचारों को उपलब्ध करना।

(iv) अवकाश के समय का सकारात्मक उपयोग के लिए सभी को अवसर प्रदान करना।

(v) प्राचीन काल से संबंधित विषयों पर शोध करने के लिए मानव जाति की साहित्यिक धरोहर का परिरक्षण करना।

(vi) समाज के अभिलिखित विचारों का संरक्षण करने वाली प्रमुख ऐजेंसी के रूप में समाज कल्याण के लिए कार्य करना ।

(क) सांस्कृतिक स्तर को समुन्नत करने के लिए ग्रंथालय

ग्रन्थालय समाज में जनसाधारण की बुद्धि ज्ञान और समाजिक स्तर को काफी हद तक बढ़ाते है। ये समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति की सामान्य बुद्धि व ज्ञान को भी बढ़ाते है। ग्रंथालय पठन रूचि का विकास करते है और व्यक्ति के सांस्कृतिक स्तर को बढ़ाकर उनके पढ़ने की रूचि में परिवर्तन भी लाते है।

व्यक्ति को विद्वान सभ्य और सुसंस्कृत बनाने के लिए प्रभावपूर्ण शिक्षा प्रणाली की आवश्यता होती है जो मुख्यत: प्रचुर अध्ययन साम्रगी के संकलन पर निर्भर करती है। यदि सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए पठन सामग्री का प्रंबध करना हो तो ग्रंथालय अनिवार्य है। ग्रंथालय समुदाय की ज्ञान प्राप्ति की सभी संभव आवश्यकताओं की पूर्ति तथा शोध की सुविधा तथा जनसंख्या के सभी वर्गों के लिए मनोरंजन और सूचना प्रदान करता है।

(ख) ग्रंथालय सुसंस्कृत नागरिक बनाने का साधन

एक सु-सभ्य समाज से यह अपेक्षा की जाती है कि उसका प्रत्येक नागरिक शिक्षित

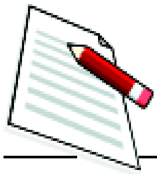

टिप्पणी

हो व शिक्षित समुदाय के मूल्यों और ग्रंथालय के महत्व से पूर्णतः अवगत हो। जहाँ कही भी सम्यता है वहाँ ग्रंथ अवश्य होंगें और जहाँ ग्रंथ होगे वहाँ ग्रंथालय अवश्य होगें। ग्रंथालय अपनी प्रकृति, विशेषता, विभिन्नता एवं सेवाओं के विस्तार और गुणवत्ता के द्वारा एक अच्छे समाज के निर्माण में सहायक होते है। यह व्यक्ति के सभी प्रकार के क्षैक्षिक विकास में सहायता करता है। प्रत्येक उपयोगकर्त्ता को पाठन सामग्री को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराके उनके ज्ञान विचार व दृष्टिकोण को सक्षम बनाने में सहायता करता है किसी भी लोकतंत्र की सफलता उसके शिक्षित व प्रबुद्ध नागरिकों पर निर्भर करती है। ना कि उनके सामाजिक स्तर पर। एक शिक्षित और परिष्कृत नागरिक ही सही व गलत का निर्णय ले सकता है। यह उपयोगकर्त्ताओं की बुद्वि को जाग्रत करके कठिन समस्याओं का उचित ढ़ंग से हल करने में उनकी बौद्धिक क्षमता का विस्तार करने में सहायता करता है।

(ग) ग्रंथालय पुस्तकों के अध्ययन की प्रवृति को प्रोत्साहित करता है

एक सामाजिक संस्था के रूप में ग्रंथालय न केवल पाठकों को पुस्तकें प्रदान करके संतुष्ट करते हैं बल्कि उनके उपयोग की आकांक्षा एवं मांग की प्रवृत्तियों को भी प्रोत्साहित करते हैं। लोगों में अध्ययन की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करते हुए वह उन्हें ग्रंथालयोंन्मुखी बनाने व पुस्तकों के प्रति उनके हदय मे प्रेम भावना को जाग्रत करता है। पुस्तकों की माँग की पूर्ति के लिए ग्रंथालय वांच्छित पुस्तकों को उपलब्ध करवाते है। अतः समुदाय के सामाजिक जीवन में ग्रंथालय का योगदान महत्वपूर्ण है। ग्रंथालय में पाठ्य सामग्रियों के संकलन में वृद्धि पाठको के द्वारा माँगे जाने वाली पुस्तकों से सम्भव होती है इसी कारण ग्रंथालय समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण हैं।

(घ) ग्रंथालय सामाजिक सांमजस्य की सुविधाएँ प्रदान करता है

ग्रंथालय सामाजिक संस्था के रूप में उपयोगकर्ताओं में आपसी सम्पर्क स्थापित करने की सुविधा प्रदान करता है। व्याख्यान सामूहिक विचार विमर्श, सामाजिक प्रकरणों पर चर्चा एवं गोष्ठी, प्रदर्शनी एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों के द्वारा उपयोगकर्ताओं में आपसी सम्पर्क स्थापित करवाता है। ग्रंथालय समाज में पारस्पारिक मेल मुलाकात के अवसर प्रदान करता है। व ऐसे आयोजन में सभी वर्गो समुदाय को एक समान अवसर प्रदान करता है।

(च) ग्रंथालय ज्ञान संरक्षण करता है

ग्रंथालय पुरालेखों और दुलर्भ प्रलेखों का संरक्षण साहित्यिक विरासत के रूप में भावी पीढ़ी के लिए रखता है। यह मानवता के साहित्यिक अवशेषों को विभिन्न भौतिक रूप में अनुसंधान के लिए संकलन रखता है। इस प्रकार के संकलन अनुसंधानकर्ताओं के ऐतिहासिक पहलू की विवेचना में सहायक होते हैं।

1.5.2. शिक्षा में ग्रंथालय की भूमिका

व्यक्ति की शिक्षा तथा प्रशिक्षण को आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए एक अनिवार्य साधन के रूप में माना जाता है। लोगों को प्रबुद्ध और सुसंस्कृत बनाने के लिए समाज में अच्छी शिक्षा-प्रणाली आवश्यक है। ग्रंथालय के अभाव में न तो अच्छे विद्यालय महाविद्यालय और विश्वविद्यालय हो सकते है और न ही प्रौढ़शिक्षा की जीवन पर्यन्त शिक्षा को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि जहाँ औपचारिक शिक्षा समाप्त होती है वहाँ अनौपचारिक शिक्षा प्रारम्भ होती है। जीवन पर्यन्त अध्ययन की प्रकिया की निरंतरता के लिए उपयुक्त एवं प्रचुर संख्या में ग्रंथालय सेवाओं की आवश्यकता होती है।

(क) ग्रंथालय का लोक विश्वविद्यालय स्वरूप

शिक्षा का उद्वेश्य व्यक्ति को मानवीय ज्ञान व कौशल से अवगत करना है ताकि वे स्वविकास के अपने नागरिक और सामाजिक दायित्वों की भावनाओं को मन से समझ सकें और इस प्रकार वह समाज और राष्ट्र के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। इस प्रयत्न में ग्रंथालय को लोक विश्वविद्यालय के रूप में देखा जा सकता है।

(ख) ग्रंथालय जन शिक्षा का केन्द्र

किसी देश के भावी विकास के लिए राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक–आर्थिक विकास, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रबुद्धता में ग्रंथालय की सामान्यतः तथा सार्वजनिक ग्रंथालय की विशेष रूप से, बड़ी महत्वपूर्व भूमिका है। सभी वर्ग के लोगों को बिना किसी भेदभाव के ग्रंथालय सेवाओं को सुलभ करने में ग्रंथालय बौद्धिक उत्प्रेरक का कार्य करते हैं क्योंकि ग्रंथालयों से ही ज्ञानार्जन शिक्षा, सूचना, मनोरंजनात्मक सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यांकन, अनुसंधान की सभी सुविधाएँ बिना लिंग आयु के भेदभाव के समाज के कल्याण के लिए प्रदान की जाती है।

(ग) सतत् शिक्षा के केंद्र के रूप में ग्रंथालय

लोग अपनी सतत् शिक्षा को जारी रखने के लिए पठन-पाठन की प्रवृति तथा क्षमता अपनी आवश्यकतानुसार ग्रंथालयों की सहायता से प्राप्त करते रहते है। लाखों लोगों को सतत् शिक्षा केंद्र के रूप में यह लोगों में व्यवसायिक और कार्मिक ज्ञान कौशल को विकसित करने की सुविधा प्रदान करता है जिससे वे अपनी व्यक्तिगत एवं सामुदायिक समस्याओं का समाधान कर सकें। ग्रंथालय व्यक्ति को अनौपचारिक सतत् शिक्षा की जीवन पर्यन्त सुविधा प्रदान करता है।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. समाज में ग्रंथालय का क्या महत्व है?

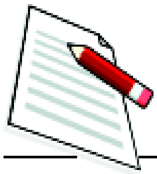

2. ग्रंथालय के माध्यम से लोगों का सामाजिक तथा शैक्षणिक विकास कैसे सम्भव है?

1.6 सूचना केंद्र

सभ्यता की प्रगति और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की उन्नति के कारण साहित्य में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। बहुविद विषयों में ज्ञान का विस्फोट न केवल ग्रंथ जगत में हुआ है, वरन नवीनतम शोध पत्रिकाओं, अनुसंधान, तकनीकी रिर्पोट, पेटेंट, मानकों और विनिर्दशों व्यापार में लेनदेन, परिपत्रों, पुर्नमुद्रित अनुमुद्रित मे भी है। विशेषज्ञों को ग्रंथ की ही आवश्यकता नहीं होती है बल्कि पत्रिकाओं के लेख व अन्य साम्रगी में प्राप्य सूचना की भी आवश्यकता होती है। सूचना केंद्रों की स्थापना विशेषज्ञों की विशिष्ट सूचना की अवश्यकताओं के प्रदान करने के लिए हुई है।

सूचना केंद्र को ऐसे संगठन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो 1. मांग किए जाने पर, सूचना सामग्रियों अथवा सूचना का चयन, अधिग्रहण, संग्रह, और पुर्नप्राप्ति करते हैं। 2. सारांशों, स्रोतों की सूचना को अनुक्रमणिका बना कर प्रसारित करते हैं। 3. माँग एवं अनुरोध किए जाने तथा माँग किये जाने की प्रत्याशा में सूचना का प्रसार करने की एजेन्सी को सूचना केन्द्र कहते हैं। सूचना केन्द्र उच्च विशिष्ट अनुसंधान एवं विकास संगठन से संलगन होते हैं सूचना केन्द्र अपने उपयोगकत्ताओं को विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करते हैं जैसे संदर्भ सेवा साहित्यिक खोज, अनुवाद, वाङ्मय सूचियाँ, सारांशकरण आदि।

सूचना केन्द्र के कई प्रकार होते हैं, जैसे

1. सूचना विश्लेशण केन्द्र
2. क्लियरिंग हाउस
3. डाटा केन्द्र तथा डाटा बैंक

1. सूचना विश्लेषण केन्द्र

यह केन्द्र विशेष विषयक्षेत्र में उपलब्ध साहित्य का संकलन, संग्रह, उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन और उनका सम्प्रेषण अनुसंधान में कार्यरत विशेषज्ञों को उनकी माँग व उनकी उपयोगितानुसार प्रदान करते हैं। ये केन्द्र संगृहित सूचनाओं की वैद्यता विश्वशनीयता और शुद्धता का मूल्यांकन करने के पश्चात् ही उसका प्रसार करते हैं। इस प्रकार यह अनुसंधान में प्रबलता प्रदान करता है और ज्ञान में कमी या उसमें त्रुटियों को उजागर करने में अहम भूमिका निभाता है।

2. क्लियरिंग हाउस

क्लियरिंग हाउस या तो सहयोगी आधार पर या राष्ट्रीय अथवा अतंरराष्ट्रीय एजेंसी द्वारा

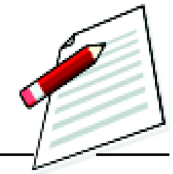

स्थापित किये जाते हैं। विभिन्न स्रोतों देशों और भाषाओं से उत्पन्न हुई सूचनाओं को एक ही केन्द्र से प्रदान करते हैं। ये विशेष ज्ञान की शाखा की वाङ्मय सूचियाँ बनाते हैं। और उनको सम्बद्ध रूचि रखने वाले संगठनों को परिसंचारित करते हैं। मांगे जाने पर उपलब्ध प्रलेखों की प्रति भी प्रदान करते हैं।

3. डाटा केन्द्र और डाटा बैंकः

डाटा केन्द्र उपयोकत्ताओं के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए विशिष्ट विषयों से संबंधित संख्यात्मक आंकडों का संकलन व्यवस्थापन और संग्रह करता है। ये उपयोगकर्त्ताओं के भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सूचनाओं का संकलन करते हैं। डाटा बैंक साधारणतयाः व्यापक विषय क्षेत्र से संबधित होते हैं ये संकलित आकडों के स्रोतो और संबद्ध साहित्य से अपरिष्कृत आँकडों को तैयार करके उनका सार निकालते हैं। ये उपयोगकर्त्ताओं के प्रश्नों का उचित उत्तर देने के लिए संरचनात्मक ढंग से फाइल तैयार रखते है। इन केन्द्रों का प्रबंधन विषय विशेषज्ञों ग्रंथालय और सूचना व्यवसायी द्वारा होता है जो अनुरोध करने पर सूचनाओं का व्यवस्थापन पुर्नप्राप्ति और उनका प्रसार करते है। इन केन्द्रो के कर्मचारियों में विभिन्नता हो सकती है। लेकिन ये अनुसंधान अधिकारी, ग्रंथालयी, वाङ्मयी, या प्रशिक्षित सूचना अधिकारी हो सकते हैं। इनके कार्यों में विशिष्ट ग्रंथालय के कार्य और उनकी गतिविधियों का विस्तार, जिसमें उनके समानान्तर कार्यो जैसे तकनीकी लेखन, सारांशों, चयनित सूचनाओं का प्रसार और उपयोगकर्त्ताओं के लिए ग्रन्थालय अनुसंधान शमिल हैं।

1.6.1 ग्रंथालय और सूचना केन्द्र में अन्तर

कई प्रकार से ग्रंथालय सूचना केन्द्र से भिन्न हैं। ग्रंथालय अपने उपयोगकर्त्ताओं को समष्टि प्रलेख प्रदान करते हैं जबकि सूचना केन्द्र व्यष्टि प्रलेख प्रदान करते हैं। ग्रंथालय सूचना केन्द्र से विभिन्न प्रकार के प्रलेखों के संग्रह, उपयोगिताओं के स्तरों व प्रकारों, प्रलेखों के स्थान पर सूचना की उपलब्धि से, और आन्तरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार के उपयोगकर्त्ताओं को सेवा प्रदान करने में भिन्न हैं ये न केवल सूचना का संग्रह, प्रसंस्करण और उसको प्रदान करते हैं अपितु सूचना का विश्लेषण तथा प्रर्दशन भी करते हैं। मुख्य भिन्नता यह है कि ग्रंथालय केवल प्रलेख प्रदान करते हैं जबकि सूचना केन्द्र न केवल प्रलेख प्रदान करते हैं, अपितु प्रलेख में से उचित सूचना प्रदान करते हैं। उदाहरणार्थ पुस्तकालय में सूचना से संबंधित पुस्तक प्रदान की जाती है जबकि सूचना केन्द्र में यर्थाथ सूचना, न कि पूरी पुस्तक।

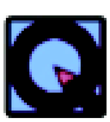

पाठगत प्रश्न 1.4

1. सूचना केन्द्र की परिभाषा दीजिए।
2. ग्रंथालय सूचना केन्द्रों से किस प्रकार भिन्न हैं?

1.7 सूचना युग में ग्रंथालय और सूचना केन्द्र

समाज स्थिर नहीं बल्कि परिवर्तनशील है। ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था है। सामाजिक परिवर्तन से ग्रंथालय की भूमिका भी प्रभावित होती है। वतर्मान समाज में प्रायः सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं। ये कारण हैं

- समाज में राजनैतिक और सामाजिक स्थिरता
- शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार और साक्षरता में उच्च वृद्धि
- राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय, सामाजिक सांस्कृतिक परंपरायें
- प्रवजन के कारण जनसंख्या का शहरीकरण व वैश्वीकरण
- व्यापार और वाण्ज्यि उद्योग और व्यवसायों में वृद्धि
- राष्ट्रीय स्थानीय और राज्य सरकारों द्वारा प्रोत्साहन।
- उच्च जीवन स्तर
- विभिन्न क्षेत्रों में नेताओं और व्यक्तियों का प्रभाव
- सुस्थापित पुस्तक व्यापार
- जनसंचार
- कंम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी

इन सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों ने ग्रंथालय के परम्परागत कार्यो में परिवर्तन एवं विकास व वृद्धि के सभी पहलुओं पर बड़ा प्रभाव डाला है ये अपने उपयोगकर्ताओं के लिए प्रलेख ही नहीं प्रदान करते बल्कि उनके लिए बहुमाध्यम के संकलन भी प्रदान करते हैं। आधुनिक ग्रंथालय के मूल कार्यो को करने मे परिवर्तन आये हैं, जैसे संकलन, प्रसंस्करण, पुनःप्राप्ति, प्रसार और सूचना की उपयोगिता, नई सूचना संचार और नेटवर्किंग प्रौद्योगिकियों ने ग्रंथालय के कार्यो को पूर्णतः परिवर्तित किया है आधुनिक ग्रन्थालयों में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के द्वारा सूचना का संकलन, प्रसंस्करण, संग्रह और प्रसार होता है उपभोगकर्त्ताओं को सूचना उनके ही डेस्क पर या उनके घरों में लेन (Local Area Network) और वेन (Wide Area Network) के द्वारा प्रेषित की जाती है। उपभोगकर्त्ताओं को ग्रंथालय में आकर सूचनाओं को प्राप्त करने की आवश्यकता नही रह गई है जिसके परिणामस्वरूप उनके समय की बचत होती है।

ग्रंथालय को एक सेवा संस्था के रूप मे माना जाता है। कम्प्यूटर, संचार, सूचना और नेटर्वकिंग, प्रौद्यौगिकियों के आगमन ने ग्रंथालियों को चुनौती दी है। दक्ष सेवाओं को

प्रदान करना व उपलब्ध संसाधनों का प्रभावपूर्ण ढ़ग से उपयोगकर्त्ताओं द्वारा उपयोग करने में सहायता देने के लिए ग्रंथालयी को इन चुनौतियों को स्वीकर करना होगा। इन परिवर्तनों से निपटने, इनका लाभ लेने, व उन्हें अपनाने के लिए तैयार होना पड़ेगा।

पाठगत प्रश्न 1.5

1. आधुनिक ग्रंथालयों को सूचना प्रौद्यिगिकी ने कैसे प्रभावित किया है?

आपने क्या सीखा

- ग्रंथालय उपयोगकर्त्ताओं को दक्ष सेवाओं को प्रदान करने के लिए सभी मुद्रित व गैर मुद्रित साम्रगी के संकलन व्यवस्थापन और संग्रह के लिए उत्तरदायी हैं।
- ग्रंथालय समाज के आम नागरिक के सामाजिक, शैक्षिक स्तर के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है यह मानव की अनुसंधान, सांस्कृतिक, मंनोरजन, आध्यात्मिक और वैचारिक गतिविधियों के प्रोत्साहन में सहायता करते हैं। जिसके कारण राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रमों के लिए योगदान होता है।
- ग्रंथालय ज्ञान भंडार के रूप में उपयोगकर्त्ताओं के लिए स्वयं में मूल्य का निर्माण करता है ग्रंथालय ज्ञान की उन्नति के साथ साथ राष्ट्र की आत्मा का निर्माण करने के साधन उपलब्ध करता है।
- पुस्तकालय का प्रयोग लोगों को समाज में प्रबुद्ध नागरिक बनाता है और भविष्य में उन्हें शिक्षित एवं ज्ञानवान बनाने में सहायता करता है।
- सूचना केन्द्र वह संस्था है, (1) जो माँग के अनुसार सूचनाओं का चयन, अभिगमन, संग्रहण करके उन्हें पुनः उपलब्ध कराती है। (2) सूचना के संक्षिप्तिकरण सार-तत्व और अनुक्रमणिका तैयार करती है और (3) मांग तथा पूर्वानुमित मांग के लिए सूचना को पुनः प्रसारित करती है। सूचना केन्द्र अतिविशिष्ट अनुसंधान और विकास से जुड़ी संस्थाओं का हिस्सा होते हैं। लोगों द्वारा ग्रंथालय का उपयोग उन्हें समाज में प्रबुद्ध नागरिक बनाता है और उन्हें समयानुसार ज्ञानवान व शिक्षित बनाता है।
- आधुनिक सूचना-संचारण और नेटवर्किंग प्रौद्योगिकी ने ग्रंथालय के कार्य-कलाप में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है। आज सूचना के संग्रहण, संस्करण, संकलन और पुनः प्रसारण के लिए परिष्कृत प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है।
- कार्यस्थल अथवा घर पर भी उपयोक्ता को सूचना उपलब्ध कराई जाती है, इसके लिए लेन (Local Area Network) और वेन (Wide Area Network) का उपयोग किया जाता है। उन्हें ग्रंथालय तक जाने की आवश्यकता नहीं है, और इस प्रकार उनके बहुमूल्य समय की बचत होती है।

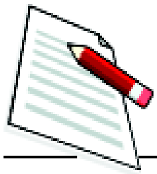

पाठान्त प्रश्न

1. बदलते हुए समाज में ग्रंथालयों की भूमिका पर विचार विमर्श कीजिए।
2. ग्रंथालय समाज में औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा को प्रोत्साहन करने में योगदान करता है। चर्चा कीजिए।
3. ''ज्ञान ही शक्ति है'', इस कथन की व्याख्या ग्रंथालयों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कीजिए जिसमें लोगों के ज्ञान में अभिवृद्धि होती है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. ग्रंथालय के मूल आवश्यकताओं में कार्योत्मक भवन, मानव विचारों को रखने वाले विभिन्न अभिलेखों में, पांडुलिपियाँ, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, दृश्य श्रव्य माईक्रोफिल्म, चार्ट आदि और संभावित उपयोगकत्ताओं द्वारा उनका उपयोग करना है।
2. मानव विचार पुस्तकें, पत्रिकाएँ, पाण्डुलिपियों, श्रव्य, दृश्य, रिर्काड, सूक्ष्मफिल्म, ग्राफ, चार्ट मानचित्र सीडी डी.वी.डी. आदि में उपलब्ध है।

1.2

1. ग्रंथालय के मूल कार्यों में शिक्षा का प्रसार, सांस्कृतिक और मनोरंजनात्मक गतिविधियों के लिए सूचना की पहुँच सम्मिलित हैं।

1.3

1. ग्रंथालय एक सामाजिक ऐजेंसी का भी कार्य करता है यह स्व-अध्ययन की स्थायी संस्था भी है। यह सामुदायिक बौद्धिक केन्द तथा लोक विश्वविद्यालय भी है।
2. ग्रंथालय का उपयोग लोगों को समाज का सूचना संपन्न नागरिक बनाता है और सीखने तथा शिक्षित होने में उसकी समयानुसार सहायता करता है।

1.4

1. सूचना केंद्र को ऐसे संगठन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो 1. मांग किए जाने पर, सूचना सामग्रियों अथवा सूचना का चयन, अधिग्रहण, संग्रह, और पुर्नप्राप्ति करते है। 2. सारांशों, स्रोतों की सूचना को अनुक्रमणिका बना कर प्रसारित करते है। 3. माँग एवं अनुरोध किए जाने तथा माँग किये जाने की प्रत्याशा में सूचना को प्रसार करने की एजेन्सी को सूचना केन्द्र कहते है। सूचना केन्द्र उच्च विशिष्ट अनुसंधान एवं विकास संगठन से संलग्न होते हैं।
2. कई प्रकार से ग्रंथालय सूचना केन्द्र से भिन्न है। ग्रंथालय अपने उपयोगकर्त्ताओं को समष्टि प्रलेख प्रदान करते है जबकि सूचना केन्द्र व्यष्टि प्रलेख प्रदान करते

है। ग्रंथालय सूचना केन्द्र से विभिन्न प्रकार के प्रलेखों के संग्रह, उपयोगिताओं के स्तरों व प्रकारों, प्रलेखों के स्थान पर सूचना की उपलब्धि से, और आन्तरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार के उपयोगकर्त्ताओं को सेवा प्रदान करने में भिन्न है मुख्य भिन्नता यह है कि ग्रंथालय केवल प्रलेख प्रदान करते हैं जबकि सूचना केन्द्र प्रलेख में से वास्तविक सूचना प्रदान करते हैं।

1.5

1. ग्रंथालय के मूल कार्यों में जैसे संकलन, प्रसंस्करण, संग्रह, पुनः प्राप्ति, प्रसार और सूचना की उपयोगिता में कम्प्यूटर प्रयोग करने से परिवर्तन आये हैं।

पारिभाषित शब्दावली

1. **पुरातत्व विषयक (Antiquarian) :** दुर्लभ संग्रह का अध्ययन
2. **सौदर्य (Aesthetic) :** सौंदर्यानुमति के संबंध में मन और भावनाओं का अध्ययन
3. **उत्प्रेरक (Catalyst) :** परिवर्तन लाने में सहायक तत्व
4. **बहुश्रुत (Erudite) :** ज्ञान और विद्वतापूर्ण गतिविधियाँ
5. **वृहत प्रलेख (Macro document) :** विषय के मुख्य रूप का ज्ञान देने वाला प्रलेख
6. **सूक्ष्म प्रलेख (Micro document) :** विषय का गहन ज्ञान देने वाला प्रलेख
7. **फोनोरिकार्ड (Phono-record) :** ध्वनि के अंकन को ग्रहण करने वाला
8. **भंडार (Repository) :** ग्रंथालय सामग्री को भंडारित करने वाला स्थान

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. किसी भी बड़े ग्रंथालय में जाएँ और उसके वातावरण, संग्रह और विभिन्न सेवाओं से परिचित हो कर उन पर अपनी रिपोर्ट लिखिए।

2. ग्रंथालय में कार्यरत व्यावसायिक से बातचीत करते हुए उनके कार्य को समझें। ग्रंथालय में आने वाले उपयोगकर्त्ताओं के प्रकारों व उनके द्वारा उपयोग किये जाने वाले प्रलेख के प्रकारों की जानकारी का अवलोकन कीजिए।

वैबसाईट्स

1. http://www.ifla.org/files/assets/literacy-and-reading/publications/role-of-libraries-in-creation-of-literate-environments.pdf

2. http://www.egyankosh.ac.in/handle/123456789/7236

3. http://www.cobdc.org/jornades/7JCD/ryynanen.pdf

4. http://dspace.knust.edu.gh:8080/jspui/handle/123456789/3716